॥ श्रीकृष्णाय नमः ॥

श्रीभक्तिग्रन्थमाला





ग्रन्थाङ्क ५०

महानुभाव भगवदीय

श्रीपद्मनाभदासजीके [illegible]-पद

तथा

श्रीगोकुलाधीशजी महाराजके

२५ वचनामृत



संपादक : अनन्तराम हरिकृष्ण शास्त्री

अमदावाद



[illegible] [illegible]भाई छगनलाल देसाई

[illegible], ११०, [illegible]

अमदावाद.



कि. ०-४-०

प्रथमावृत्ति



प्रत २०००



संवत १९८४

मुद्रणस्थान : वसंतमुद्रणालय : अमदावाद

मुद्रक : चीमनलाल ईश्वरलाल महेता

॥ श्रीकृष्णाय नमः ॥ श्रीगोपीजनवल्लभाय नमः ॥
॥ श्रीमदाचार्यचरणकमलेभ्यो नमः ॥

श्रीपद्मनाभदासजीकृत ४० पद

पद १. राग भैरव.

श्रीलक्ष्मणभटपुत्र पादरज बहुत राज-धानी ॥ दरस परस होत सरसावेशित चित्त चित्त व्रजजन घरघर रवन कला केलि जानी ॥१॥ कनकांगन रंग द्रवत सदन उर व्रजपुर भावसों मिलि बुद्धि सानी ॥ पद्मनाभ सब विध संपत्ति दंपती आनंद अदेय दानके दानी॥२॥

पद २ राग देवगान्धार.

श्रीवृन्दावन रम्यक रसदानी ॥ श्रीवल्लभ-पदकंज माधुरी, तिनकूं जिन अलि यहां रुचि मानी ॥१॥ भ्रूविलास अन्तःपुर गह्वर रासस्थली दृगन दरसानी॥ नन्दसूनु सुख अवधि यहांलों

मंडल ओर पास रुह पानी ॥२॥ वागधीश यु-
वजन रसमूली, मधुराई मुरली मधु जानी ॥
अटपटी बात लपेट बहुत सखी, सुरझावत सब
ब्रज अरुझानी ॥३॥ अंतरंग बहिरंग प्रसंगित
मधुर मधुर बंसी गुन गानी॥ सप्तरंध्र व्हे प्रकट
केलि जे प्रचुर करी सखी बहुत सयानी ॥४॥
नखशिखाग्र संकुलित विविध निधि, कृपाग्रंथि
सम्यक सुख लानी ॥ सन्मुख भये नेह वरदे-
श्वर, पाछें पुलिन ठोरकी ठानी ॥५॥ भूखन
भाव वसन पट पहेरे, ललित घटा गहरानी ॥
दशनखचन्द्र किरन रंजित व्हे, पद्मनाभ अ-
खियाँ अरुझानी ॥६॥

पद ३ राग गोरी.

शोभा रसमय भाव प्रकट करि श्रीवल्ल-
भवरदेहम्॥ नखशिखादि ब्रजवधूविरहनी व्या-

पियुगलस्नेहम् ॥१॥ वृन्दारण्यइन्दुसंपुट हृदय-
गूढकन्दरागेहम् ॥ पद्मनाभ सुतहितकृत मार्ग
नेह मुरलिकायेहम् ॥२॥

पद ४ राग टोडी.

हेलि नवनिकुंजलीलारसपूरित, श्रीवल्लभ
तनमन मोरे ॥ अंगअंग विपिन छवी निधान
घनदामिनी द्युति फलफल प्रति दोरे ॥१॥ क-
रत प्रवेश विरहवह्निसुत भूतल बहुत कठोरे ॥
पद्मनाभ मधुरेश विचारत श्रीलक्ष्मनभटसुत
ओरे ॥ २ ॥

पद ५ राग देवगन्धार.

यथा नेहवेहं तथा पुत्रदेहं प्रवेशस्वरूप-
प्रमाणम् ॥ वेणुनाद वृन्दावन तद्रूप गोकुलस्त्री
निरोधप्रबोधित ए सह सूत्रसमानम् ॥१॥ तत्त-
द्भावभूषिता मूर्ति एतावत्कृत अनुसन्धानम्
॥ पद्मनाभ मधुरेशचरणरुह राग परम सौभा-

ग्य अलंकृत प्रभुदास मधुकर मधुपानं अभय अदेय दीय दानम् ॥२॥

पद ६ राग रामकली.

श्रीमथुरेशे अवधि कृपा व्रज देशे आविर्भावप्रसंगे ॥ शरदनिशाकर वीक्ष्य मधुरवर मन तनु घन अभ्रसलिल रम्यक भरवृष्टि वेणुसुरंगे ॥१॥ विविध विहार भये गिरिगह्वर प्रसरित रन्ध्रतरंगे ॥ नेहसंलग्न समवेध सखी वधूवृंद आकर्षे समग्रे पद्मनाभ संकुलित सकलात्रिय बंधित पाश अभङ्गे ॥२॥

पद ७ राग भैरव.

देखे मदनमोहन देखियत जितातित करुणामय श्रीवल्लभ मूरति ॥ कहत न बने मग्न स्नेहरंग, आनंदसंपत्ति सब लालसा रासरसकी भ्रुकुटी पूरति ॥१॥ नखसिख प्रतिचित्त देय अवलोकित पैयत निधि वृन्दावन जे दूरति ॥

पद्मनाभ प्रभुचरणकमलयुगल अमलसों गोपी-
जनवल्लभकी स्फुरति ॥२॥

पद ८ राग सारंग.

हेली रसमय श्रीवल्लभसुत प्रगट भये
आज ॥ अंग अंग द्युति तरंग मधुरावली केलि
प्रसंग द्रग विलास औंह भाल कमनीय साज
॥१॥ लीलामृत रसाल प्रेम भक्ति के प्रतिपाल
स्मरण करे निहाल भावकी बांधे पाज ॥ पद्म-
नाभ वागवीशकुंवर केलि कल अखिल अव-
गाहत प्रेमसिंधु व्रजजन सिरताज ॥२॥

पद ९. राग तोडी.

बलिबलि मुख सुखरूप परमानंदमय श्री
लक्ष्मणनंदनकी छबी न्यारी ॥ नील सजल
चपला युत अंग अंग द्युति तरंग नख शिख
प्रति ऊलही रहत भावकी घटारी ॥१॥ दरस
परस होत सरसमन प्रचंड सघनवन फेलि रहत

कृपादृष्टि वृष्टिकी उजीयारी ॥ पद्मनाभ प्रभु-
रसाल वागधीश वल्लभ मूरती अवनी रवन
भवन भाव तारेकी तारी ॥२॥

पद १० राग असावरी.

पान पीकसों रंध्र मूंद गयो क्वणित वेणु
वृंदावन अधर छुवायो॥ स्वर सब मूंद गये लिये
हाथमें निहारत फूंकसों सुधारत पुनि श्रीदा-
मातें धुवायो ॥१॥ परेरी पराग भुवपर अनुराग
मिलि गायो मधुरमोद उपजायो ॥ व्रजजन
फुलवारी बेठे जहां विरह मकरंद सब गोकु-
लन चखायो ॥ जिततिततें सुध लावत सखी
सब भई वेसी गति जेसी जा दिन बजायो ॥
पद्मनाभदासप्रभु रसिककुंवर वर लाल गिरिधर-
जूको कर प्रसंस समलायो ॥

पद ११ राग असावरी.

श्रीलक्ष्मणलालकी निकाई कहांलो कहूं-

रा माई॥ मधुरावृत मधुर निकुंज मधुररस ता-
हीतें मुरलीरंध्र व्हे फेलि परी मधुराई ॥ १ ॥
नेह निबिड अरण्य निकर व्रजजनमन घन
गति प्रति रास घटा सजलाई॥ वसायो मधुर
उत्सवपें सरसभाव शरण उपटाई ॥ पद्मनाभ
मधुर वचन मिंडवारी करी करि प्रेम प्रणीत
अपनाई ॥ २ ॥

पद १२ राग सारंग.

प्रगट भये श्रीवल्लभकुमार । आनंद सं-
पत्ति सब व्रजमंझार । हृदय निबिड गहवर वि-
लास वन वाकनृपतिको अनुभवी मधुप शरीर
धरी कछुक करेंगें सौरभ विस्तार ॥१॥ परिवृढ
रत्नरासतरुनीन मय वृंदाविपिन बिरह सिंगार ।
छबीकी ललिततरंग अंगअंग संग स्वामिनी कृपा
निज धाम अभिराम श्यामघन सूचन करत द्रग
ओंहवार ॥२॥ रसिकनको रसदान करन हित

यशमय उर पहेरेहें हार। अतिप्रवीन त्रिय नखशिख प्रति नित्य केलि संकुलित सकल वपु करत प्रवेश सुत पराग लेनको फूलकमल मध्य मूलवार ॥३॥ घोखलालको नेह निरंतर बीज वयो अवनी अवतार ॥ प्रचुर प्रचंड भयो द्रुम जितातित भाव खंड अविरोधि अखंडित रस-मंडन विट्ठल पद्मनाभ मधु फलित डार ॥४॥

पद १३ राग सारंग.

याहीतें मुकुटमणि व्रजजनके वागधीश ढोटा प्रसंगे। जवतें निकुंज निधि प्रकट भइ मधुराई सब सौंज लीए, याहीतें विरहवान्हि उ-द्योत किए कुंवर रास तरुणी सदृश इनही संगे ॥१॥ हिलगही हिलग गिरधरकी अंग अंग प्रति तरंगे ॥ पद्मनाभ वेणु नृपति आत्मजको स्व-रूप यथार्थ येह जवलों रहे रसभर एक अंगे ॥२॥

पद १४ राग काफी.

श्रीमद्वल्लभ आनंद परमानंद अंग अंग रासे ॥ शरदमासे व्रजवासे दिनादिन प्रति नव हुलासे रवन वृंदावन विहारके हेत भूविलासे ॥ सरलकेश अतिसुदेश विरहवेश साजे ॥ तेल फुलेल त्याग कीये अद्भुत छबी छाजे ॥ २ ॥ भ्रकुटी फरकत भावभरसों तिलक चमक भाल ॥ पोंछत पट व्हे रहे पलक नेन लाल ॥ ३ ॥ वदनकांति अनूप भांति सुखसमूह नगरी ॥ हसत लसत प्रतिबिंबत श्याम हास सगरी ॥ ४॥ नख शिख प्रति मधुर खानी तामें मधुर बानी ॥ मुरली मधुर मोहन अधर याहीतें जानी ॥५॥ उदर उदधि गुण अथाह सबे ला-लसंगी ॥ वक्रिम कटि ग्रीव गुल्फ रहत ज्यों त्रिभंगी ॥६॥ धोती उपरना पीतांबरसों अनु-रागे ॥ जानो व्रज पलाश कुसुम रासद्युति लागे

॥७॥ फरहरात विप्रयोग छोरमें झकोरे ॥ अर्ध ओढी अर्ध आगे नेह मांह बोरे ॥ ८ ॥ लीला अखंड आभिनय भुजदंडमांझ सगरे ॥ तनक हलन चलन होत फिरत भेद बगरे॥९॥ नखशिख चरणारविंद निज प्रताप सघनी ॥ पावत परमाब्धि निधि नेह करज लगनी ॥ १० ॥ मौन साधि काज साधि प्रेम निर्वाह कीनों ॥ गमन करत गोपी गृह जब संन्यास लीनो ॥ सदाई संपत्ति सदा प्रगट गिरधर इन व्हेहें ॥ पद्मनाभ ओर विचारत भ्रम व्यामोह व्हेहें ॥१२॥

पद १५ राग काफी.

रागरंग रंगी रसको रासरंगरंगी ।श्रीलक्ष्मणभट्ट ये लाल रसकी मुरलिका रंध्ररंध्र घरघर मधुरामृतपूरित प्रियाप्रसंग सावेष्टित सुंदर सुताडित घनतरंगी ॥१॥ स्वर वर रस समुद्र प्रगट संपुट कुंज संगी ॥ पद्मनाभप्रभु

रसाल दान देत लेत गोपी नेह द्रव्यसौन्दर्य जुरी भरी रही प्रेम पेंठ तीन्यो लोक त्रिभंगी॥

पद १६ देवगान्धार.

कहां लों कहों आलीरी श्रीलक्ष्मणभट्ट सुतकीजु निकाई॥ नख शिख प्रति आनंदकेलि बेलि फरी निबिड गूढ वक्र भली चरणकुंज द्वार सेवे सुखमय निधि पाई ॥ १ ॥ द्रग विशाल मांझ लाल प्रगट रसावेश कीये केशनका आभा मुकुट डोलन समुदाई ॥ वृंदावन चंद विरह भूषन अंगअंग लसत हंसत वदन रहत सदा रोमरोम व्रजपुरेंदु वयन छबि छाई ॥२॥ युगल रंग विप्रयोग उपरना उपवीत अरु कंजमाल यही भाव भाई ॥ पद्मनाभ प्रभु उदार श्री वल्लभ अवतार रहस्यावृत विपिनकृत सुनहो रसिकराज प्रतापलेश मात्र गाई ॥३॥

पद १७ राग काफी.

महारसरंगरूप दानी श्रीवल्लभ मुखविलास ॥ निज प्रसंगकी तरंग अंगअंग लीला ललित गलित स्वेद भ्रुकुटी भंग आवत डगमगी डगन देखे बने पाछे प्रेम विवश प्रभुदास ॥१॥ प्रेम आविर्भाव भूषण रसमय प्रकाश ॥ हलन चलन जमुना तीर नेह गंभीर निवडाललीत अंतर गांस ॥२॥ केलिसागर परमानंद चाहनमें जित तित सखी दृष्टि परत सुखसमूह रास कदम मंदिर रमन राज सुचित्त उर हुलास ॥ पद्मनाभप्रभु विचित्र मनोहरमय मुरली कृतकृत्य व्रजवास ॥३॥

पद १८ राग मारु.

कोउ रसिक नहीं या रसको ॥ वागधीश वचनामृत गहवर पराकाष्ठा प्रेम प्रसंगित व्रजपुरवधू स्वरूप निष्ठा सुनिसुनि काहुन

कसको ॥१॥ वृंदावन आनंद उदधिको पार नही कहुं जसको ॥ श्रीलक्ष्मणसुत चरणकमल परागमधुपूरित पद्मनाभ अली ताको हे चसको ॥ २ ॥

पद १९ राग ईमन.

प्रगट पूर्णानंद वागधीश मधुरमूर्ति स्फूरती व्रजदेश मधुरास उपदेशं ॥ वेणु वृंदावन-गेहमध्य उपस्थित नेहवेह प्रवेश अमित संदेशं ॥१॥ दान कृपा विविध वरनिक रंग रूपद्वार महाभागाब्धिभावखंडप्रवेशं । यशोदाउत्संग रासादिलीलामृत तत्पादप्रताप पद्मनाभ शि-रसि छाय आवेशं ॥

पद २० राग सारंग.

श्रीमद्वल्लभरूपसुरंगे ॥ नखसिख प्रति भावनके भूषन वृंदावन संपत्ति अंगअंगे ॥१॥ चटक मटक गिरिधरजूकी नांई एनमेन व्रज-

राज उछंगे ॥ पद्मनाभ देखेही बन आवे सुध रही रास रसाल भ्रूत्रंगे ॥२॥

पद २१ राग केदारो.

श्रीलक्ष्मणसुत नीके गावे ॥ प्रभुदास दमला बडभागी तिनकुं पुनिपुनि आप सिखावें ॥ प्रेमविवश व्हे श्रीवल्लभप्रभु नेनन सेनन अर्थ जनावें। प्रकट प्रत्यक्ष यशोदानंदन रसिकसभातें सबे बतावे ॥२॥ वृंदावन रम्यक अवनि रस उरसंपुटतें कोउ न पावे । पद्मनाभ गिरिधर रसलीला वेणुनादकी बतियां भावे ॥३॥

रासोत्सवपद आरंभ.

पद २२ राग केदारो.

अवनी रमन मधुरमय वृक्ष उदभव प्रचंडम्॥ भाव शाखा सरल हरित घनतडित सम सुखद छाया व्रजप्रेमखंडं ॥१॥ पत्र किसलय निबिड युवतिवर वशीकर वपु मोहात्मकमधुरदेहं ।

राग अनुराग भरि निकर शशी मोदकर मंजरी मोर निजनेह येहं ॥ २ ॥ मधुरदानाव्रत रसद बहु फलितफल स्वाद अधिकार भंडारभवनं । चलविचल रहसि वृंदावनं सूचनं प्रकट एतादृशं पादपद्मम् । पद्मनाभादि ऋषि पुष्टिमार्गागमी उपासित चरण सेवित प्रसादं । मधुरोत्सवात्मक रूपगह्वरारण्य वदति व्रजवल्लभी वल्लभनादं ॥४॥

पद २३ राग केदार.

विविध रसरास वृंदावनं तादृशं वल्लभ उर प्रेमदेश वीक्ष्यम । ताडितघनद्युतिसदृश द्विजाविव उपस्थित श्यामरूपाकृति अंग निरीक्ष्यम ॥१॥ यशोदाउत्संगलीलादि रसस्वाद सुखनिकर आनंदगिरिशिखरशोभं । रसलीलै कद्रुमानिर्मित निविड वर रहस्य गहवरारण्य गुप्तगोभं ॥२॥ प्रेमपारंगव्रजभक्तव्यापाराहितअ-

हर्निश भावदृश विशदगमनं ॥ काश्चिद्गाश्चार-
रस काश्चित् दधिदानरस काश्चित् व्रजराजरस
केलिभवनं ॥३॥ काश्चित् शैलधरणं काश्चित्
तांडव नृत्यलुब्धलोभं ॥ काश्चित् श्रीअंग आ-
नंदनिधि सदृश नेहद्रव्यादिसहसमावेशं ॥ ४ ॥
काश्चित् भूषन वसन काश्चिद बर्हापीड काश्चि-
द्रम्यक कटाक्षनिरोधं॥काश्चिदभिनय अलकवेप-
मानकिंजल्कं व्यापारयुतप्रबोधं॥५॥ सर्वात्मनि-
वेदि कृपा वेणुमदमत्त एतादृश लक्ष्मणसूनुहृद-
यम्॥पद्मनाभादि ऋषि सप्तरंध्र प्रवेश उदाग-
वेश मृदुद्रवितहृदयम् ॥६॥

पद २४ राग केदारो

निकुंज वैभव दामोदरदास देखी चाहत
हें मिल्यो सखीयनमें टहल हित ॥ कनक
भूमिपर कदंब सघन विपिन ठोर ठोर लता लूम
लूम रही जगमगात रवन भवन रावटी जित-

तित ॥१॥ निज स्वरूप निकट जमुनाकूल दोउ रत्नखचित छतरीनकी पंक्ति जहां केलि हे अखंड नित ॥ पुलिन नलिन निकर शिखर सोभा कछु कही न जात सारस हंस मोर कीर कोकिल कूजतहें गान करत मधुव्रत ॥२॥ निरख गौर श्याम अंग लुभित चित्त करे प्रसंस लक्ष्मन भट सुत उदार वचन दीयो दमला प्रत ॥ पद्मनाभ कृतकृत्य भये दोरी चरणकमल गहे पुष्टिपक्ष वेन कहे एक जन्म राज यह कीजे मत॥

पद २५ राग मारू.

सरस रमन गिरिधरन अंग अंग रंगमय कहुं कहा लक्ष्मणभट्ट सुतकी निकाई ॥ विरहे समाज साजे भूषण विसद भ्राजे लाजे व्रज जन भाव तादृशता तकतोले रहि छबि छाई द्रगन अरुनाई ॥१॥ ठाडे बंसीवट तट दम-

लादिक ओर पास कुंजस्थली सुयश ध्यान समुदाई ॥ करतो उन्नत करि कबहुक उर धर फिरि मंजु कुंजमांझ प्रेम पाज बांधि रीति रसमय बताई॥२॥निकुंज मोर कुहुक मारत घूमर घूमर घटा आई गरज सुहाई॥ जमुना हिलोर सोर पवन झकोर थोर कोकिला लोल रोर कदंबा दिक द्रुम प्रचंड लता विलुलाई ॥३॥ रंध्ररंध्र वृंद वृंद अलि गण अति प्रेममग्न गावत मलार राग रंग वितान छाई ॥ पद्मनाभ चपला चमक रत्न भवन जटित गिरिधर पियप्यारी बेठे पत्र डोले नील पीत संपत्ति दरसाई॥

पद २६ राग मलार.

रसपूरित श्रीवल्लभ मूरति अंगअंग नख शिख वर, दरसपरस होत प्राप्ति परम पुरुषार्थकी ॥ वेणु रंध्र मारग जीतने रह निबिड नेह मधुरा-

वलि वेष्टित ललित त्रिभंग, समाज सरस सौं-
दर्य कलाप श्रमज एतादृश पथिकनि पर छांह
परत मनरथ सारथि की ॥१॥ अतिउदार आ-
त्मजप्रद मध्य फेलि व्रज कीरती, ना रथकी ॥
पद्मनाभ प्रभु हे सर्वोपर मधु संगमविलास
अनुभव नृप अति अधिक अवधि भई, यहां
स्थित प्रबल कटाक्ष कृपा अनुचर सब रास-
स्त्रीभाव निजवैभवसों सिद्ध करत सुखार्थकी ॥

पद २७ राग गोरी

प्रगट भये घनचंद्रमा श्रीलक्ष्मणभट्ट गेह॥
नवनिकुंज लीला लिये रहसि सुधानिधि नेह
॥१॥ संगमभाव सिंगार हों सोभा वरनी न
जाय ॥ गृह गृह प्रति सब सुंदरी सोभा रहत
मन अरुझाय ॥ २ ॥ रासविलासक्रीडा करी
मुरली मधुरे गान ॥ वर्हापीडनटवरवपुसंगम

साज समान ॥३॥ श्रीवृंदावन भूषण मुख सोभा हे अनूप ॥ दृग विशाल रसरंग भरे निजमें ललित स्वरूप ॥ ४ ॥ सरल केश अतिसोहने श्याम सचिक्कन भाय ॥ झलकन मुकुट आभा लिये पिय मुख सुख दरसाय ॥ ६ ॥ ललित कपोल मुकुर मृदु प्रतिबिंबित आनंद ॥ वह सोभा सुख जानवी सब ब्रज जन मन इंदु ॥६॥ स्नेहार्द्र मंडल गंड बर्दरीयां सुरंग सुरंग ॥ वह सोभा संध्या समय सब निशि केलि तरंग ॥७॥ हंसन खेलन मृदु बोलन संगम भाव सुहाय ॥ वहुत होत जब सोच यह सोभा उरलाय ॥८॥ वक्र भ्रौंह व्हे जात हे कूजत वेणु रसाल ॥ सोइ विध यहां देखीये नेन रंगीले लाल ॥९॥ वंक चितवनी वेशसों चितवत ब्रजजनकी ओर ॥ सोई सोभा सुखद होत हे भावे लहर झकोर ॥१०॥ वदन देखी विथकित भये रसि-

क सकल यह भांति ॥ पलक ओट व्है उर लहीं
जहां ब्रजजन उर लांति ॥११॥ यह आनन्द मृदु
माधुरी सब ब्रज जन सुख देत ॥ रसिक विना
को पावहीं भाव रसारस लेत ॥ १२ ॥ अंग
अंग भये रंग है वसन दामिनी साथ ॥ गुणातीत
मधुरेशजु ताहीतें ब्रजनाथ ॥१३॥ लटकमटक
भुवि फिरनमें रसमय भावप्रकाश ॥ नहां प्रवेश
व्हे भ्रमरको दामोदर प्रभुदास ॥१४॥ चरण-
कमल अनुरागको वहुत होत विस्तार ॥ पद्म-
नाभके उर वसो यानें चित्त होय उदार ॥

पद २८ राग सारंग.

रसिक नागर वक्त्र अनुरक्त या स्वामिनी
वदनेंदु रमणरंगे ॥ वदरवरनं तद्भावकरनं
व्रजे नासागत मुक्ता दृग भ्रुकुटिभंगे ॥१॥ पि
च्छगुच्छावली ग्रथितभावावली निविड अल-

कावली सुधासंगे ॥ प्रणतव्रजवधूप्रार्थना इयमेव आरण्यतत्फलमिदमिति प्रसंगे ॥ २ ॥ शोभाशतवृतानिकुंजाद्रिदलात्मक प्रशस्तविप्र-योगात्मकवर्धकअनंगे ॥ पद्मनाभदासप्रभु वेणुपथ प्रगट करी स्वस्वरूपदर्शक हृदय अं-गरंगे ॥ ३ ॥

पद २९ राग सारंग.

श्रीवल्लभस्वरूप दुर्लभ पैवो ॥ निजभावा-वली अंग अंग रंग रंग त्याग सिंगार सज नख सिखलों बाह्याभ्यंतर रसपूरित मूर्ति विविध केलि मधुमय अनुभव धनाढ्य सोई सत्यपंथ उपदेश कीये. करी सदृश अब उलटी सों भई सुलटी जो कहत गुरु गोपी परि यह प्रमाण खिलवार देखी आधिक्य आपुनपो आपु वखानत दुर्लभ रसमंडन यह मारग रसिक-

नकों जैवो ॥१॥ विरह संजोग भोग भेदावली नेह वेह व्हैहै जो बतैवो ॥ वृंदावनाविहार रस-सागर मथमथ प्रगट पदारथ किये सोइ नि-र्वाचक अनुभव अखंड रास परमानंद प्रसर अमितरमिताक्षराकार रस अतिउदार निधान कृपानिधि व्रजजन हृदय सांचें में प्रेमतरंग प्रचुर भये तडिदिव बीजावली वैवो ॥ २ ॥ करत निरोध विहार सकलविध उर लायें मृदु इंदु मधु अलैवो ॥ अकथ कथा कहांलों कहीये ? सखी रहीये मौन साधि, धरीये चित्त वंसी नृपतिचरनपंकज मुख रटत जय जय जय मधु-रेश यह कोउ भाव परम पुरुषार्थ साधक ता-हीतें सर्वात्मना जाचत पद्मनाभ पदरज बल लैवो ॥ ३ ॥

पद ३० राग सारंग

मधुवन सघन स्वरसपूरित भ्रुकुटीभाव संकु-

लित नेहवर ॥ सहज सुगंध अद्भुत अखंडित निबिडतम उभय विलास रासरसललित लतान कृत गहवर दिनकर दर्शनप्रभा दुहुं दिसते वाग-धीश रहिवेकों रह घर ॥ १ ॥ वचन माधुरी प्रफुल्लित हंसन लसन कल मेन मनोहर ॥ इत उत कोउ न अघात सुख सींचत काननको सोइ घन सप्त रंध्र वंसीपथ प्रगटित शरद इंदु अनुचर आगे करि प्रेम वल लरी लगी एक व्रज पर ॥२॥ एकाकी न जात ताहीं अंग व्र-जरत्ननमें भावनिकर ॥ पद्मनाभ यह निधि अवधि वाकी बिना चरण विन अंग विन मग चलवो श्रीवल्लभ पदरज वल तव मिलवो गो पीजन मार्ग पुनि आगे मधुरेश प्रभु कर ॥३॥

पद ३१ राग सारंग.

श्रीवल्लभरूप आनंद गगन अंग अंग नि

कुंजस्थली केलिघटा सजलभाव नेह रही उ-
लहरी ॥ यमुना युगल कूल फूलनसों फूले फूल
रावटी जटित जेति तट मणिबंध रेति ते नीय
विहार विविध रसमय सूचित चित्त पद्मनाभभाव
नेन्ही नेन्ही बूँदन परी ॥१॥ व्रजरज मत्तावेश
मार्गाब्जदिनेश तब तो दरस दरस ले उघरी
॥२॥ तामें केउकवार रुमझुम आवत प्रसंग पट
ओट चपला चमक दृग लाल भौंह लाल गरजत
रज साधे गह्वर भीर प्रेमसमीर व्है के ने
रुरी ॥३॥ दामोदरदास आदि याही अनुभाव
कर छांह सीतलाई व्रजभूमिका हरी ॥ श्रील-
क्ष्मणलाल रसमय रसाल लीलाब्धि निकर
जाल संकुलित मधुप्रवाल ॥ पद्मनाभ कहालों
कहे या विप्रयोग अग्नि सुतते उमरे ठिटक
रहे वेणुरंध्र सिन्धु मधु कृपानाव वेठि चली
वधू रास पैली ओर भावभरते उसरी ॥४॥

पद ३२ राग बिहाग.

वृंदावन विरहवह्नि चरण समीप बिन नाहीन लालप्राप्ति ताको प्रमाण रासमंडलमें पाइयत ॥ रसमय स्वरूप मधुरेशजूको गाइयत तातें व्रजगोपी आप गुरु कर ज्ञापित ॥१॥ प्रबल प्रचुरता प्रगट भयो प्रताप श्रीवल्लभ अग्नि मृदु मार्गको स्थापित॥ पद्मनाभ वागधीश लीला प्राकट्य अतिउदार सुखसार जे भंडार कदंबादिक मंदिर रह अकह भेद तारी भाव इनहीकें हाथ सकल ओर कहा कहुं केलि संगम सुधापति देखित ॥२॥

पद ३३ राग सोरठ.

सुनो व्रजजन मारगकी बातें। उबट बाट लूटत पंथी सब कहीयत हो ताते ॥ १ ॥ प्रेमपुरी पद पद प्रति वासो नेह निसंक दुहा-

ई ॥ अभय ध्वजा महलनपर राजत भाव गेल द्रुम छाई ॥२॥ मधुरमयी फलफूल लगत तहां ललित लता निविडाई ॥ पाज दुहुं दिश राज-हंसकी केलि कुंज सघनाई ॥३॥ सारस हंस चकोर मोर खग अनुचर हैं अनुरागी ॥ लगन लालसुं सदनसदनप्रति कल कोकिल रट लागी ॥४॥ रस रसाल वर ठोर ठोर पर सर वचना-मृत राजे ॥ उपज मनोहर कमल कुमुदिनी सलिल सकल पर भ्राजें ॥५॥ वेणुरंध्र मानों मत्त मधुपगन रमन करत हैं हेली ॥ गजगति चलत लगत सव अंगन स्याम लटक तरुवेली ॥६॥ पेंठ लगत दधि मृदु माखनकी छीकें छीकें सजनी ॥ याही भांति व्योहार लालसों परत न कवहु रजनि ॥७॥ जावन पेंठें दुहावन पेंठ सुखसमूह री माई ॥ पनघट पेंठ होत मि-सनिसमें आनंदकी अधिकाई ॥८॥ सिंघपोरकी

पेंठ अटपटी रूपरास दरसाई ॥ सर्वस्व दे दे लेत गोपिका दृग दृग तुला तुलाइ ॥९॥ हिलगपेंठ में सेंवें बिकानी नव त्रिभंगी वर पायो ॥ ऐसी पेंठ लगत हे केउ या संग प्रेम समायो ॥१०॥ उपज मिलनकी वृंद वदनकी भीर वहुत वह ठोर ॥ बाजत दुदुंभि बरखि रहत सुख कथा कंदरा सोर ॥११॥ प्रथम वासिये श्रीवल्लभपदकंजनगरहीं माई ॥ जहां पराग पद्मनाभादिक निधि वृंदावन पाई ॥१२॥

पद ३४ राग सारंग.

केसरी धोती पहिरे केसरी उपरना ओढे तिलक मुद्रा धरे वेठे श्रीलक्ष्मणभट धाम जन्म दिवस जान जान अद्भुत रुचि मान मान नखशिखकी सोभा उपर वारों कोटिककाम ॥ सुंदरताई निकाई तेज प्रताप अतुलताई

आसपास युवतिजन करत हें गुनगान । पद्म-
नाभ प्रभु विलोक गिरिवरधर वागधीश जे अव-
सर हुते ते महाभाग्यवान ॥

पद ३७ राग विहाग.

मधुर व्रजदेश वस मधुर कीनो ॥ मधुर-
वल्लभनाम मधुर गोकुलगाम मधुर विट्ठल भ-
जन दान दीनो ॥१॥ मधुर गिरिधरन आदि
सप्त तनु वेणुनाद सप्त रंध्रन मधुररूप लीनो॥
मधुर फल फलित अतिललित पद्मनाभ प्रभु
मधुर गावत अली सरस रंगभीनो ॥२॥

पद ३८ राग विलावल.

श्रीविल्लभ चाहे सोई करे ॥ इनके पद दृढ
करि पकरे महा रससिंधु भरे ॥ १ ॥ नाथके नाथ
अनाथ के बंधु औगुन चित्त न धरे ॥ पद्मना.
भकूं जान आपुनो बूडत कर पकरे ॥२॥

पद ३७ राग बिलावल

श्रीविट्ठलनाथ झूलत हे पलना ॥ मात अक्काजू हरखि झुलावत लेले सुरंग खिलोना ॥१॥ चुटकी दे दे हँसत हंसावत निरखि वदन मन फूलना ॥ पद्मनाभ प्रभु दैवोद्धारार्थ प्रकट भये श्रीगोकुलके ललना ॥२॥

पद ३८ राग गौरी.

श्रीलक्ष्मण गृह आज बधाई ॥ श्रीवृन्दावन भूखन सुख प्रकटित व्रजलीला संपत्ति सुखदाई ॥१॥ प्रचुर भावज्ञ भूतल रसिकनके मृदु मूरति जिनके हित आई ॥ भाव विभु संपत्ति लीए अंगअंग रंगरंग मेह देह भूखन द्युति घनतडिदिव दरसाई ॥२॥ सहज स्वभाव सकल व्रजकेली घटा गहराई ॥ वरसन मेह प्रेम व्रजवासी दुरिदुरि दरसपरस सरस प्रभावते पद्मनाभ वलैया जाई ॥३॥

पद ३९. रामकली.

रसना श्रीवल्लभ नाम उचार ॥ श्रीविठ्ठल गिरधर श्रीगोविंद बालकृष्ण सुखसार ॥ १ ॥ श्रीगोकुलपति रघुपति जदुपति श्रीघनश्याम उदार ॥ श्रीगोकुल यमुना वृंदावन निशदिन करत विहार ॥ २ ॥ पद्मनाभ परिवार सकल फल कल्पवृक्ष सिंगार ॥ लीलामृत रसपान करावत रसिकन वारंवार ॥३॥

पद ४० राग रामकली.

भज मन श्रीगोकुलसुखसार ॥ श्रीवल्लभ श्रीविठ्ठल श्रीगिरघर निशदिन करत विहार ॥१॥ यमुना कल्पलताके सन्मुख करगहीं ढिग बेठारं ॥ ब्रह्मछोकरतर ब्रह्मसबंध दे दींने रस-में डार ॥ २ ॥ श्रीवल्लभकी शरण न आये ते जन भुव के भार ॥ पद्मनाभ प्रभु वागधीशकी ये विधि व्रजकी नारी ॥३॥

पद ४१ राग जेजेवंती.

वागधीश रूपरंग जानतहें व्रजवधू मुरलिका मग अनुभव करि आई ॥ राग अनुराग स्याम अंगअंग कुंजनमें प्रवेश विद्या भलेई सिखाई ॥१॥ नेह वेह छेह गये मन क्रम वचन लहे येवो तदपि इन घातनमें पाई ॥ भावनके गृह कीये भावनके पेंड लीये ठारठार भावस्थली भाव लपटाई ॥२॥ हावभाव चातुरी विहार व्रज व्याप रह्यो रसकर इंदु उरझानि उरझाई ॥ जितातित प्रेमपेंठ नगरनागरवर प्रगट प्रसंग वन वानिक बनाई ॥ ३ ॥ छविकी ललित तरंग रंध्ररंध्र फेलिपरें तामे श्यामलाल सब वाल अपुनाई ॥ पद्मनाम मधुनिधि ठाडे उरवांही मधुरेश देत ले ले विधि छिपाई ॥४॥

पद ४२ राग सारंग.

एसी बंसी बाज रही वनघनमें व्यापी

रही ध्वनि महामुनिनकी समाधि लागी ॥
भयो ब्रह्मनाद उठत उग्र आह्लाद जहांतहां
व्रजघोषरत्नवृंद भये सब त्यागी॥२॥ रासादिक
अनेक लीलारसभाव पूरित मूर्ति मुखारविंद
छवि धरे विरह अग्नि जागी ॥ तब वेणुनाद-
द्वार अब लक्ष्मणभट सुत कुमार पद्मनाभ
दैवोद्धार अर्थ त्यागी ॥२॥

पद ४३ राग जेजेवंती.

माई आज तो राखी वंधावत कुंजनम
दोऊ ॥ फूले रसभर दोउ यह छवि लसे
जोऊ ॥ १ ॥ पचरंग चूनरी लागी बिचबिच
मोति पोऊ ॥ ललितादिक राखी वांधत अति
सुख होऊ ॥२॥ दक्षिणा रहसि देत जैसी चाहे
सोऊ ॥ युगलचरनकमलरति पद्मनाभ होऊ ॥३

पद ४४ राग सारंग

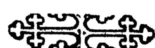
सरस अवनिभवन आनंदघन कुंज छवि

पुंज सुख सहज शोभा ॥ रसिकवल्लभ परम नवलयश अनुपम रूप किरणामृत बहु भांत गोभा ॥ १ ॥ निजनिरोध अंग अंग पोढे सुख अपने रंग विविध नव केलि रसरंग रहे लोभा ॥ अपूर्ण हे ।

पद ४५ राग सारंग.

ढाडिन नाचे रंगभरी । ब्रजरानीकी कूख सिरानी सब सुख फलन फरी ॥१॥ गृहगृहतें गोपी जुर आई देखन कौतुक री ॥ होत वधाई मंगल गावत देत दान सगरी ॥२॥ तव यशोमती सुन्दरी पहेराई हरखित मोद भरी ॥ हँस बोली यों कहत महरि सों देखन लाल अरी ॥३॥ तव जसोमती ले लाल दिखायो शोभासिंधु खरी ॥ पद्मनाभ सहचरी छबि निरखत वारत सर्वसरी॥४॥

॥ इतीश्री पद्मनाभदासजीके ४५ पद संपूर्णम् ॥



नित्यलीलास्थ गोस्वामी श्री ६ श्री गोकुलाधीशजी महाराज के

२५ वचनामृत.



वचनामृत १.

कोई समे नंदगाँवमें कूवापें एक वेरागी वेठ्यो हतो । वाको एक व्रजवासिनीने पूछी, “जो बाबाजी ! दरसन करी आये ?” तब वा वेरागीने कही, “जो में तो दिनभरमें आज दरसन नहीं किये !” तब वा वाईने कही; “जो तू चले तो आपुन संग चली दरसन करी आवें। में जेहर गहेना पहिर के आउं । तू यांहीं वेठ्यो रहियो ।” तब वा वेरागीने कही; “तू वेग अइयो” इतनो कही के वेरागी वेठ्यो; ओर वह वाई जेहर धरिवे गइ; सो फिर न आइ । ओर वह वेरागी राह देखदेख संध्या

समो भयो तब वहां ही सोय रह्यो, सो रात्रिकुं नींदमें वह वेरागीकुं सुपनो भयो, तामें देखे तो वह बाइ संग मिलके दरसनकुं गयो हे, सो दरसन करत श्रीनाथजीने अपनी पागमेंसों गुलाबको फूल वा वेरागीकुं दियो ओर श्रीदाउजीने गेंदाको फूल दियो, ओर हु सुख बहुत भयो, सब रात्रि सुखमें बीती। सवेरो भयो तब वेरागी जाग्यो। इतनेमें वह बाई कूवापें जल भरिवेकुं आइ। तब वह वेरागी बाईसुं लरिवे लाग्यो। ओर कही, "जो तू मोंकुं कूवापें बेठाय जाय सोय रही, मोकुं दरसन विना राख्यो, ओर सब रात जाडेसुं मार्यो"। तब वा बाईने कही, "जो बावाजी! जूठ क्यों बोले हे? आपुन दरसनकुं चले हते"। सो तब वेरागीने कही, "जो कब चले हते?" तब वा बाईने सुपनाको सुख सब कह सुनायो। तब

वा वेरागीकुं बडो आश्चर्य भयो। सो वा बाईकुं साष्टांग दंडवत् कियो तव बाईने कही " जो बावाजी ! तेने कहा व्रज सूनो देख्यो ? अबी तो व्रज हे " ।

वचनामृत २.

एक समे श्रीगुसांईजी ठकुरानी घाट पें बिराजत हते । दोनों लालजी संग हते। तामें श्रीगिरिधरजी आपकी दाहिनी ओर बिराजत हते । ओर श्रीगोकुलनाथजी बांही ओर बिराजत हते । संध्या को समो हतो । कछु अंधेरो भयो हतो। वा समे श्रीजमुनाजीमें एक वडको पतौवा पैर्यो जात हतो। तव श्री गुसांईजीने श्रीगिरिधरजीसुं कही, " जो गोवर्धन ! देख केसो सुंदर ढांकको पतौवा पेर्यो जाय हे ? " तव श्री गिरिधरजीने कही, " हां, काकाजी ! "

ता वातकी श्री गोकुलनाथजीको बुहुत रीस चडी। सो श्रीगुसांईजीके आगे तो कछु वोले नाहीं। जब घर पधारे, तब श्रीगिरिधरजीसुं कही, "जो दादाभाई! काकाजीने बडको पतौवाको ढांकको पतौवा कह्यो सो तो ठीक; जो काकाजीको तो वृद्ध श्रीअंग भयो हे, ओर संध्याको समय हतो. जासुं वडके पतौवाको ढांकको पतौवा कह्यो। परंतु आपने हांमें हां केसे मिलाई? तब श्रीगिरिधरजी बोले; "जो भाई! काकाजीको श्रीअंग वृद्ध भयो जासुं दृष्टिवल कछु थोरो होयगो, सो ये वात केसे संभवे? पुरुषोत्तमको दृष्टबल कब घटे? परंतु काकाजी को मन वा विरियां श्याम ढांकपे हतो, जासुं वडके पतौवाको ढांकको पतौवा कह्यो।" तब श्रीगोकुलनाथजीने कही. "जो दादाभाई! "काकाजी के मनकी तो आपने ही जानी"।

वचनामृत ३.

एक समे श्रीगुसांईजी श्याम ढांकपे विराजत हते। बडे पुत्र श्रीगिरिधरजी पास विराजत हते। इतनेमें मरे गधाकुं बहारवारे घसीट ले जाते हते। तापें श्रीगुसांईजीकी दृष्टि परी। तब श्रीगिरिधरजीनें कही, "जो गोवर्धन! यह कहा हे?" तब श्रीगिरिधरजीने कही, "जो काकाजी! यह तो बहारवारे लोग हे, सो मरे गधाकुं घसीट ले जाय हें।" इतनो सुनत ही आपके नेत्रनमें जल भरि आयो। ओर कही, "जो या गधाके भाग्यको वर्नन कहांतांइ करे? गोवर्धन! तू मोकुं एसेही करीयो।" ता बातकुं बहुत बरस भये। जब आपकी इच्छा लीलामें पधारवेकी भइ, तब गोविंदस्वामीको हाथ सायके कंदरामें पधारे। तब श्रीगिरिधरजी पीछे पीछे चले। तब आपने

कही, "जो गोवर्धन ! तोकुं तो अब ढील हे। एसे दोय चार वेर आपने कही। तो हू श्रीगिरिधरजी पीछे पीछे आये। तब आपकुं श्याम ढांककी बातकी सुध आई। तब श्रीअंगको उपरना श्रीगिरिधरजीकुं दियो ओर कही, "जो यासों करियो।"

वचनामृत ४.

एक समे श्री दाउजी महाराजकी दादी श्रीकमलावहूजीसों वहोराने प्रश्न कियो, "जो महाराज ! श्रीमहाप्रभुजीके सेवक केसे?" तब आपने आज्ञा करी, "जो कहा कहेनो ? श्रीमहाप्रभुनके सेवक साक्षात् कुंदन" तब फेर विनति करी, "जो महाराज ! श्रीगुसांईजीके सेवक केसे ?" तब आपने आज्ञा करी, "जो वाह ! कहा कहेनो ? श्रीगुसांईजीके सेवक

साक्षात् चांदी ।" तब फेर बिनाति करी, "जो महाराज ! सातो वालकन के सेवक केसे ?" तब अपने आज्ञा करी, "जो कहा कहेनो ? सातो वालकनके सेवक साक्षात् धातु ।" तब फेर विनति करी, "जो महाराज ! आपके सेवक केसे ?" तब कही, "जो वहोरा ! हमारे सेवक तो कंकर-पत्थर !!" तब वहोराने साष्टांग दंडवत् कर ओर कही, "जो जेजेजे कृपासिन्धु ! न तो श्रीमहाप्रभुजीसुं भई, न श्रीगुसांईजीसुं भई, न सातो बालकनसुं भई, जो आपसुं भई ।" एसे बहोराके बचन सुनके पहेले तो आप खीजे, पीछे तो प्रसन्न भये ओर बाइसु कही, "अरी, देखतो; तोसाखानामें, कोइ चुनडी हे ? बहोरा ! तोकुं तो बनाउंगी बनडी, ओर श्रीगोकुलनाथजीकुं बनाउंगी बनडा, ओर सहेराको सिंगार करुंगी, ओर कछु सामग्री । बहोरा ! काल तोको

आज्ञा हे। तब बहोराने कही, "जो कृपानाथ! या घडी के लिये मेनें आज तांइ ब्रह्मसंबंध नाहीं कियो।"

वचनामृत ५.

ओर एक समे कसुंवा छठको उत्सव नजीक आयो। तब श्रीगुसांईजीने एक आदमींतें कही, "जो श्रीनाथजीकी पाग रंगारीके यहां ते ले आव।" सो आदमी लेयवे गयो। सो जाय के देखे तो रंगारी रंग के घूंट भरभर के पागकुं छिरकें हें। सो देखके आदमीने आय के श्रीगुसांईजीसुं कही, "जो राज! रंगारी या तरहसुं पाग रंगे हे।" तब आप तो कछु बोले नहीं। जब रंगारी पाग रंगके तैयार कर लायो, तब श्रीगुसांईजीने कही, "जो पागको रंग उतार ले। तब वह रंगारी पाग ले जाय के

जीतनो रंग पाग पे चडायो हतो, सो उतारके कोरी पाग पहुचायके चल्यो गयो। जब दिन आठ उत्सवके रहे तब श्रीनाथजीने श्रीगुसांईजीसुं कही, "जो मेंतो वाही की रंगी पाग धरुंगो।" तब श्रीगुसांईजीने फिर वह रंगारीकुं बुलायके श्रीनाथजीकी पाग सोंपी ओर कही, "जब तैयार होय तब पहुंचाय जैयो, हमारो आदमी न आवेगो"। ओर पहेलो जो आदमी पाग लयवे गयो हतो ताको आप बहुत बरजे ओर कही, "जो मूढ! तोकुं पाग लयवे पठायो हतो के रंगारीके कृत्य देखवेकुं पठायो हतो? आज पीछे कोइ मत जैयो"।

वचनामृत ६.

एक समे श्रीनाथजी श्याम ढांकपे खेलत हते ओर गोविंदस्वामी संग हे। उत्थापनको

समय हतो सो श्रीनाथजी खेलत खेलत मोहना भंगी की कांध पे जाय चढे। सो गोविंदस्वामीने देखे। देखत खेम श्रीनाथजीकी ग्रीवा सायके कुंडमें डुवाय दिये। अब मंदिरमें उत्थापन के समय श्रीगुसांईजी पधारे। सो देखे तो मंदिर सब कसुंबामय होय रह्यो हे ! तब श्री गुसांईजीने श्रीनाथजी सुं पुछी, "जो बावा ! यह कहा !" तव श्रीनाथजीने कही, "जो तुमारे गोविंदने मोकु जलमें डुवायो।" तब आपने गोविंदस्वामी सुं कह्यो "जो गोविंद, यह कहा ?" तब गोविंदस्वामीने कही, "जो राज! में कहा करूं ? आप जाय के मोहना भंगी की कांध पे चढे।" तव श्री गुसांईजी बोले, "जो ब्रह्म हु छुवाय हे कहा ?" तब गोविंदस्वामीने कही, "जो ब्रह्म तो नाही

छुवाय, परंतु श्रीमहाप्रभुजीके घरकी मड छुवाय जाय।" तब श्रीगुंसाईजी चूप होय रहे।

वचनामृत ७.

एक समे श्री गुसांईजीने श्रीनवनीतप्रियाजीको गोविंदघाट पे पालने झुलाये। सो चादरमें पधरायके दोय छेडा श्री गुसांईजीने साये ओर दोय छेडा श्रीगिरिधरजीने साये। ओर पलना झुलाये सो झुलावत झुलावत श्री गुसांईजीको हृदय भरी आयो। ओर नेत्रनमें जल भरी आयो। तब श्री गिरिधरजीने कही, "जो काकाजी! आप खेद क्यों करो हो? आवती सालको अपने श्रीनवनीतप्रियाजीको सोनेके पलनामें झुलावेंगे।" ऐसे करत वरस दिन पीछे दूसरी नवमी आइ! सोनेको पलना सिद्ध भयो। श्रीनवनीतप्रियजीको झुलाये। झुलावती बिरियां श्रीगिरिधरजीने कही, "जो काकाजी! अब तो आप राजी भये?" तब

श्रीगुसाईजीनेकही, "जो गोवर्धन! वह सुख सो कहां?"

वचनामृत ८.

अब ओर कहत हैं। जब श्री आचार्यजी महाप्रभुजीने संन्यास धारण कियो, तब श्री गुसांईजी ओर श्रीगोपीनाथजी श्रीमहाप्रभुजी की पास हनुमान घाट की बेठक पधारे। वहां जाय श्रीमहाप्रभुजीसो विनति करी, "जो राज! आगे कलियुग हमकुं हू बाधा करेगो?" तब श्रीमहाप्रभुजीने आज्ञा करी, "जो हां, हां तुमकुं कालियुग बाधा करेगो।" यह आपके वचन सुन दोनों स्वरूपके मुखारविंद शुष्क व्हे गये। तब आपने विचारी, जो हां, इनकूं दुःख तो भयो। तब फेर आपने आज्ञा करी, जो मोकूं श्रीगोपीजनवल्लभ करके जानोगे तो तुमको कलियुग बाधा न करेगो।

वचनामृत ९.

एक समे श्रीगोकुलनाथजी परदेश पधारे हते ओर बालक सब घर हते । ओर श्रीगिरिधरजी तो लीलामें पधारे सो बालकने श्रीगिरिधरजीकी बेठक श्रीमहाप्रभुजी श्रीगुसांईजीकी बेठक सुं न्यारी राखी सो जब श्री गोकुलनाथजी परदेश सुं पधारे, श्रीमहाप्रभुजी श्री गुसांईजीके दर्शन किये, ओर श्री गिरिधरजीकूं न देखे, तब ओर बालकनसुं पूछी, "जो दादा कहां हे?" तब ओर बालकनने कही "जो जेवन घरमें हें।" तब श्रीगोकुलनाथजीने कही, जो क्यों ? तातजीमें ओर काकाजीमें ओर दादामें कछु फेर हे ?" ऐसे कही के तीनों स्वरूप पास पास पधरायें।

वचनामृत १०.

ओर एक समे श्रीबालकृष्णजीने लडुवा खायके हांडी फोरी। तिनको श्रीछोटाजीके

वहूजी सिंगार धरावत हते। सो सिंगार धरावती बेर श्रीबालकृष्णजी मुख फेरके बिराजे। तब श्रीचारुमती वहूजीने कही, "जो लालन! यह कहा? कछु तो कारन हे।" एसे कहिके एक हांडी लड्डुवासों भरके आगे लाय धरी ओर कही, "जो लालन! आछी तरह अरोगो"। वाही समे श्रीबालकृष्णजी सूधे बिराजे। सो श्रीजीवनजी महाराजके दोय लालजी; १ बडे श्रीव्रजाधीशजी, २. छोटे श्रीव्रजपतिजी। बडे वहूजी श्रीगंगावहूजी, छोटे वहूजी श्रीचारुमती वहूजी। बडे वहूजीने तो श्रीव्रजनाथलाल नगरवारेनको गोद बेठारे। सो श्रीव्रजाधीशजी ओर श्रीव्रजपतिजी दोनों स्वरूपनके संग एक पुष्करना ब्राह्मण नित्य खेलवेकु आवतो। याको नाम कमल हतो। सो जब कमल गयो सुन्यो तब श्रीजीवनजीके वहूजीने कही, जो जल हू गयो ओर कमल हू गयो।

वचनामृत ११.

बहुरी श्रीगुसांईजीको श्रीनाथजीने दूसरी बेर ब्याहवेकी आज्ञा करी! छ लालजी तो प्रगट भये हते। तो हू श्रीनाथजीकी आज्ञातें दूसरो ब्याह कियो। तामें सातमे लालजी श्रीघनश्यामजी प्रगटे। सो घनश्यामजीके प्रकटे पीछे थोरे ही दिनमें श्रीघनश्यामजीके माजी लीलामें पधारे। तब श्रीघनश्यामजीको श्रीगिरिधरजीके बहूजी श्रीभामिनीजीने पाले पोषे; अनेक तरह के लाड लडाये। जब श्रीघनश्यामजी दोय बरस के भये, तब एक दिन खेलत खेलत श्रीगुसांईजीकी गोदमें आय विराजे। तब आपने श्रीअंगपर श्रीहस्त फेर्यो, सो श्रीअंग बहुत पुष्ट देख्यो। तब आपने पूछी, "यह कोनसे लालजी हे?" तब जो पास बेठे हते, विनने कही, "जो राज! यह तो श्रीघनश्या-

मजी आपके सातमे लालजी हे"। तब तो श्रीगुसांईजी बहुत प्रसन्न भये ओर कही, "जो भामिनीने देवरकुं ऐसो पाल्यो? भामिनी! तेरी गोद सदा भरी रहेगी।" ऐसे तीन वेर आशीर्वाद दियो।

वचनामृत १२.

एक समे कोई संघ व्रजयात्रा करिवेकुं चल्यो। ता संगमें एक वैष्णव हतो, सो बहुत संकोचमें हतो। सो रसोईसुं पहुंचके वही सखडीकी हंडीयां धोय, पोंछके, लाठीमें अटकाय के ले चलतो। सो जा दिन अपने देसतें चल्यो ओर व्रजमें आयो तहां तांइ एक वही हां-डी रही। सो ओर जो संगमें मनुष्य हते, तिननें श्री गुसांईजीके आगे चुगली करी, "जो महाराज! या वैष्णवने या रीतसुं अनाचार मिलायो हे।" तब आपने वासुं कही, "जो क्यों रे?

तेने ऐसो अनाचार मिलायो ?" तब वा वैष्णवने बिनति करी, " जो राज ! आप तैलंगा हो तो योंही डूब्यो ओर योंही डूब्यो । ओर जो आप पुरुषोत्तम हो तो यह हुंडीयां मेरो कहा करेगी ?" इतनो सुनके आप मुसक्याये।

वचनामृत १३.

नारायनदास दील्हीके बादशाहके दिवान हते । परगनो कमावते । सो एक दिन चुगलीखोरने चुगली करी, " जो साहब ! नारायनदास सब खाय जाय हे । अच्छी चीज जीतनी आवे सो सब अपने गुरुके घर भेज देता हे । ओर द्रव्य बी अपने गुरुके घर बहुत पहुचाता हे । सो साहबकुं निगाह किया चाहिये । " तब बादशाहने वाही क्षण हुकम कियो, " जो नारायनदासकुं घर तें बुलाओ । " सो आदमी नारायनदासकुं बुलायवे गयो । सो नारायनदास

वा बिरियां श्रीठाकुरजीकुं सिंगार धरावत हते। ओर आदमीने जायके कही, "जो साहबका हुकम हे कि येही वखत चलो। तब नारायनदासजी सेवाको कार्य घरकेनकुं सोंपके बादशाहके पास चले। संग पचीस पचास मनुष्य, ओर हाथीके होदापे बेठके चले। बादशाहकुं जाय के सलाम किये। तब बादशाहने कही, "जो नारायनदास। परगनाको लेखो लाओ।" तब नारायनदासने कही, "जो साहिब! हाजर हे।" अब नारायनदासकी हजूरमें जीतने मनुष्य लिखवेवारे हते, तिनकुं नारायनदासने हुकम कियो, "जो लेखो तैयार करो।" अब महता मुसद्दी सब लिखवे बेठे। ओर नारायनदास सबके लेखो तपासवे लगे। ओर घरको कार्य सब मानसी रीतसुं करन लागे। लेखो देखत जाय ओर मानसी करत

जाय । सो दूध समर्पवेकी बिरियां द्वातमें लेखन डारी, तो श्याही सब दूधमय देखी । ऐसे करत सिंगार सब कर चुके । मुकुट धराय चुके । माला धरावत चूक गये । सो मालाकी गांठ तो पहेलेही लगाय राखी हती । ओर मुकुट बहुत भारी हतो । जासुं मुकुटके उपरसुं माला धरावन लागे । परंतु मुकुट भारी, तातें मुकुटके उपर व्हेके माला न धराय सके । बहुत यत्न कियो, परंतु कोई उपाय चल्यो नहीं । तब तो बहुत व्याकुल भये । तब बादशाह सामे बेठ्यो हतो, सो बोल्यो, " जो देख, सामे देख, ऐसें करके फिर यों करके फिर यों कर । " तब झट नारायनदासकुं सुध आय गई । सो मालाके दोय पल्ला तोरके, धरायके झट मरोड दे दीनी । तब बादशाहने नारायनदासकुं कही, " जो अब घर जाओ । तुमारो लेखो देख चुके । " तब

नारायनदास अपने घरकुं चले । सो मारगमें वा वातकी सुध आई । तब हुकम कियो जो सवारी फेरो । तब सवारी फेरी । सो दरबारमें आई । तब मनुष्यनने कही जो बादशाह तो जनानेमें हे । तब नारायनदास सवारी समेत जनाना घरके नीचे आये । उपर खबर करवाई जो नारायनदास नीचे ठाडे हे । तब बादशाह आय के उपर बारीमें ठाडो रह्यो ओर पूछी, "जो क्यों नारायनदास ! पीछा क्यों आया ?" तब नारायनदासने कही, "जो वा बात तुमने केसे जानी ?" तब बादशाहने कही, "जो तेरे जेसेनके पांवकी धूरसुं जानी "।

वचनामृत १४.

ओर हू कहत हे । महाराज श्रीगोपेश्वरजी श्रीकृष्णरायजीके पिता, श्रीगोविंदरायजीके दादे ओर श्री गिरिधरजी टिकेतके पर दादे; सो

श्रीगोपेश्वरजीके काका तिनको श्रीअंगमें मांदगी भई। सो जब बहुत श्रीअंग घट्यो, तब घडी घडी में पूछे, "जो गोपेश कहां हे?" तब विनके लालजीने कही, "जो दादाजी! वे तो परदेश हे" तब तो आप कछु बोले नहीं। परंतु घडी घडीमें पूछे गोपेश कहां हे ?" ऐसे करत जब अचेत भये, तब बडे लालजीने छोटे लालजीकुं आपकी सान्निध्य बेठाय के बिनति कीनी, "जो दादाजी! गोपेश आपकी सान्निध्य बेठे हें।" तब आपने लालजीके माथे श्रीहस्त फेरके आज्ञा करी, "जो चाहे जहां होय, मेरो तो जो कछु हे सो गोपेशमें ही जायगो।" सो श्रीगोपेश्वरजी केसे भये ? जिनसों सेव्य स्वरूप साक्षात् वातें करते ओर मुखसुं आज्ञा करते, "जो ओर तो सब स्वरूप हमसुं बोले है, एक श्री विट्ठलेशरायजी के स्वामिनीजी हमसुं नाही बोले हें।"

वचनामृत १५.

एक समे श्रीनाथजी के यहां परदेशतें कोई उत्तम सामग्री आई, सो भगवदिच्छातें अनजाने वा सामग्रीकुं प्रसादी हाथ लग गयो। तब मुखीया भीतरीयानने टिकेतसुं खबर करी। तब टिकेतकुं बडो शोच भयो, जो एसी उत्तम सामग्री श्रीनाथजीके विनियोगमें न आई। तब टिकेतने ओर प्राचीन वृद्ध स्वरूप विराजत हते विनके आगे कही। तब ऐसो निर्धार वृद्ध स्वरूपनने कियो जो छोटे छोटे बालकनकुं सामग्रीके पास पधराय के भगवन्नामको उच्चार करवाओ, तब अष्टाक्षरको उच्चार कियो। तब वृद्ध स्वरूप हते तिनने कही जो सामग्री छुवाइ गइ। अब गायनको खवाय दो। तब टिकेतने विनति करी, ,'जो जे जे ! याको कारन नही समजे।" तब वृद्ध स्वरूपने आज्ञा

करी, "जो जेसे अष्टाक्षरको उच्चार कियो तेसे श्रीमहाप्रभुजी श्रीगुसांईजीको नामोच्चारण करते तो सामग्री नहीं छुवाती ।"

वचनामृत १६.

एक समय बाबा जानीजी श्रीजीद्वार गये हते। तब मथुरादास भट्टजी हूं श्रीजीद्वार हते। सो दोउन को समागम भयो। तब मथुरादास भट्टजीने कही, "जो देखो! श्री नाथजीकी टहलके लिये बालक कितनो पचे हे?" तब जानीजी बाबाने कही, "ए तो दोय अंगुलीको कारन हे!" इतनो सुनत खेम भट्टजीकों क्रोध उत्पन्न भयो। सो मथुरामहजीको उंधो सूधो बोलवे लगे। ओर जानीबाबा तो झट वहां ते उठके चले गये। पीछे तें भट्टजीने विचार कियो, सो विचार करत करत जब जानी बाबा के वाक्यको आशय समझे तब मनमे वहुत

प्रसन्न भये । फेर दिन वीसके पीछे जानीबावा भट्टजीके पास गये । तब भट्टजी उठ के ठाडे भये। बहुत आदर सत्कार करिके, बेठायके कही “ जो मथुरामल्ल तो वेसेही, परंतु मथुरामल्लके संगी तो बहुत आछे ” । ऐसे समाधान करके घर पठाये ।

(दो अंगुली दिखायवे को रहस्य यह हे कि प्रभु की दो अंगुली फिरे विनतो वेणुनाद जिनने सुन्यो हे, उनकी सेवामें इतनी आतुरता होय हे ।)

वचनामृत १७.

एक बनिया वैष्णव मिरजापुरमें रहत हतो। सो वहां इनकुं एक संन्यासीको संग भयो । सो दिन अरु रात अष्ट प्रहर वा संन्यासी के पास पड्यो रहे। ताको कारन यह जो

संन्यासी पढ्यो बहुत हतो । सो कहुं तें श्री महाप्रभुजीकृत ग्रंथनको पुस्तक वाके हाथ लग्यो। सो बांचके समजवे लग्यो । सो विद्या के बलसुं एसो देख्यो जो पुष्टिमार्ग सर्वोपरि हे। तब प्रभुजीने कृपा कीनी ओर वाको वा बनिया वैष्णवको सत्संग मिलाय दियो। सो एक दिन वा संन्यासीकुं ग्रंथमें कोइ जगह प्रत्यक्ष संदेह दीखवे लग्यो । तब वा वनिया वैष्णवकों ग्रंथ दिखायो । तब वाकुं हू पहेले तो संदेह भयो। तब वाकु सुध आइ जो अमुक पुस्तकमें याको निर्णय हे। तब संन्यासी सुं कही, "जो याको प्रत्युत्तर ओर पुस्तकमें हे।" तब संन्यासीने कही, "जो देखुं तब प्रमाण कहुं" तब तादि क्षण बनिया अपने घर आयो। सो जीतने पुस्तक हते सो सब खोल के देखन लाग्यो। सो जा पुस्तकमें संदेह

निवृत्त हतो सो पुस्तक बहुत बिरियां देख्यो, परंतु भगवदिच्छातें संदेह निवृत्तिको पत्रा हाथ नही लग्यो । तब तो वाको चिंता भइ, जो अब संन्यासीकुं कहा जवाब दउंगो ? फिर न्हाय के श्रीसर्वोत्तमजी के पाठ करवे लग्यो । सो दिन अरु रात पाठ करिवो करे । खानपान सब छोड दियो। सो तीसरे दिनको अर्धरात्रि वीती तब पाठ करत आंख लगी । तब श्रीमहाप्रभुजीने जताइ, "जो इतनो कष्ट क्यों भुगते हे ? अमुक पुस्तकके सातमें पत्रामें देख" । इतनो सुनत खेम आंख खुल गई, तब वाही क्षण वह पुस्तक निकास सातमो पत्रा देख, तामें सेंधना धर, फिर वाही क्षण न्हाय धोय, कपडा पहेरके सवेरे पुस्तक ले संन्यासीके पास चल्यो, जाय के पुस्तके दिखायो । सो देखके आछी तरहसुं निर्णय करिके वा वैष्णवसों

कह्यो "जो इतने दिनमें तो में ऐसे ही जानत हतो जो तुमारे श्रीमहाप्रभुजी भूतलपेसुं पधार गये हें, अब ऐसी जान परी जो तुमारे श्री महाप्रभुजी भूतलपे अद्यापि बिराजें हें। तू वैष्णव साचो, तू वैष्णव साचो, तू वैष्णव साचो"। एसे तीन वेर कह के वाको समाधान कियो ॥

वचनामृत १८.

श्रीगुसांईजी परदेश पधारे, सो सेवा बहुत भई। आपने विचारी जो प्रथम परदेश हें, तातें यह द्रव्य श्रीनाथजीके विनियोग होय तो अछो। एसे विचारके श्रीगुसांईजी सूधे श्रीगिरिराज पधारे। सो मंडानको प्रारंभ कियो। अनेक तरहके आभरन वस्त्र, अनेक तरहकी सामग्रीको प्रमान नाहीं। एक लाख रूपीआतें बढती खर्च भयो। आभरन, वस्त्र, सामग्री सब श्री-

नाथजीको विनियोग भई। राजभोग सरे। राजभोग आरती भये पीछे श्रीगुसांईजी सातों बालक सहित भोजन घरमें पधारे। मुखीया-जीने पट्टा बिछायो ओर पातर साजी। आप बिराजे। पास सातों लालजी बिराजे। सो भगवदिच्छासों प्रथम आपने मेथीके शाकमें श्रीहस्त डार्यो, सो श्रीमुखमें डारत खेम आपकुं शाक मोटो संवर्यो दीख्यो। सो आप वाही समे विना भोजन किये उठ ठाडे भये। मुखी-याजीने श्रीहस्त धोवाय दिये। ओर आप विना भोजन किये उठे, तब सातों बालक भोजन केसे करें? सो वेहु श्रीहस्त धोयके उठ ठाडे भये। ओर आपने यह विचार्यो जो श्रीमहा-प्रभुजीने तो एसी आज्ञा करी हे जो ईनकी सेवा सावधान होयके करियो। सो इतनी श्रीमहाप्रभुजीकी आज्ञा हमसुं पली नाहीं।

तो यह देह कोन कामकी ? एसो विचार कर आपने प्रथम पुत्र श्रीगिरिधरजीसुं आज्ञा करी, " जो गोवर्धन ! गेरु मंगाय के हमारी परदनी ओर कोपीन रंगके सुकाय दे "। तब श्रीगिरिधरजी तो महाचिंतामें परि गये। ओर आप तो बेठकमें पधारे । श्रीगिरिधरजी मनुष्य पठायके गेरु मंगाय घीसवे लगे। इतनेमें श्री नवनीतप्रियाजी पधारे । सो श्रीगिरिधरजीसुं पूछी, " जो गोवर्धन। यह कहा कर रह्यो हे?" तब श्रीगिरिधरजीने कही, " जो राज ! काकाजीकी आज्ञा हे जो हमारी परदनो ओर कोपीन गेरुतें रंगके सुकाय दे। सो रंग रह्यो हूं। " तब श्रीनवनीतप्रियाजीने कही, " यह ले, मेरी हू झगुली ओर टोपी रंगके सुकाय दे। तब श्रीगिरिधरजीने " हाय हाय " शब्द उच्चार कियो । जो श्रीगुसांईजी हमारो त्याग

करके घरमेंसुं पधारे हे। अब हम निर्वाह कोन भांतिसुं करेंगे ? सो अत्यंत शोकातुर भये। परंतु आज्ञा भई सो कयों चाहिए। तातें दोनों स्वरूपनके वस्त्र रंगके सुकाय दिये। ईतनेमें श्रीगुसांइजी पधारे। सो आपके श्रीअंगमें तो अग्नि जलजलायमान होय रह्यो हे। सो आयके श्रीगिरिधरजीसुं पूछी, "जो परदनी ओर कोपीन रंग लीनी ?" तब श्रीगिरिधरजीने कही, "जो हां, काकाजी ! यह सूके हे।" सो श्रीगुसांइजी आप उंची दृष्टि करी देखे तो संग झगुली टोपी देखी। तब कही, "जो गोवर्धन ! यह कहा हे ?" तब श्रीगिरिधरजीने कही, "जो मैं तो गेरू घीस रह्यो हतो, इतनेमें श्रीनवनीतप्रियाजी पधारे, सो पूछी, 'जो गोवर्धन ! यह कहा करे हे ?' तब मेंने विनति करी, "जो काकाजीकी आज्ञा हे जो परदनी

ओर कोपीन गेरूतें रंगके सुकाय दे, सो रंगु हुं। तब आपने कही, जो ले, मेरो हू झगुली टोपी रंगके सुकाय दे। सो यहां गेरूमें पटकके पधारे। सो रंगके सुकाई हे।" इतनो सुनके श्रीगुसांइजी चूप होय रहे। फिर हारके बिराजे। या प्रसंगको आशय बहुत कठिन हे। जो एसो भारी मंडान, जामें सेंकडान टोकरा शाकके हते, तामें मेथीको शाक नेक मोटो सत्रयो, तापे आपने एसी विचारी, यामें जीवकी दृष्टि न पहुचे।

वचनामृत १९.

श्रीमहाप्रभुजी जीतने दिन भूतलपें बिराजे, तामें श्रीअंगमें कछु आभरन नाहीं धर्यो। एक कंठी खरे मोतीनकी महीन श्रीकंठमें धारण करते। सोहु श्रीनाथजीने मागी, "के जो आपकी प्रसादो तो में धरुंगो।" तब श्रीम-

हाप्रभुजीने श्रीनाथजीकुं श्रीकंठमें धराई। सो कंठी अद्यापि धरे हे। अभ्यंग समे सब आभरन वडे होय परंतु कंठी तो सर्वथा वडी न होय।

वचनामृत २०.

पद्मनाभदासजीके माथे श्रीमथुरेशजी बिराजते, सो तुलसांसो (पुत्रीसों) बहुत हीले। दिनभर तुलसांकी गोदमें लोटे ओर अनेक तरेहके तुलसांकुं सुख देते। एसे करत तुलसां वडी भई तब ब्याही। तब तो तुलसांको लेयवे ससुरारतें आये, तब तुलसांको वडो शोच भयो ओर कही जो, यह देह अब श्रीमथुरेशजी बिना केसे रहेगी? महाचिंतातुर भई। सो ताप आपसुं सहन न भयो। सो तत्काल तुलसांके पास पधारे। तुलसांसो कही, "तू शोच मत कर। में तेरे संग चलूंगो।" एसे आपके वचन सुनके तुलसां रोम रोम प्रफुल्लित भई। सवेरो भयो।

तुलसां घरके कामसुं पहुंचके प्रसाद ले गाडीमें बेठी। सो वाही क्षण तुलसा के हृदयमें तु श्री मथुरेशजी दूसरे स्वरूपसुं प्रगटे। सो श्रीमुरलीधरजी महाराज श्रीघनश्यामजी श्रीमथुरानाथजी के पिता कोटावारे के माथे बिराजे हें। सो श्रीमुरलीधरजी आज्ञा करते जो, "हमकुं सेवा करत कछु अपराध पडे तो हम तुलसांको स्मरण करें!" श्री मुरलीधरजी जब लीलामें पधारे तब श्रीकन्हैयालालजीने एसें कहो "जो कोटा रांड होय गइ।" ओर अद्यापि श्री कन्हैयालालजी एसी आज्ञा करते हें जो हमारे तो श्रीमुरलीधरजी महाराज को प्रताप हे।

वचनामृत २१.

गजनधावनके माथे श्रीनवनीतप्रियाजी बिराजते, सो जब मंगला समय होय तब पहेले तें मंगलभोगकी सामग्री सिद्ध करे, क-

टोरी साज सिंहासन के सान्निध्य धर पीछे श्रीनवनीत प्रियाजीके शय्यामंदिरमें जाय, अनेक तरेहके लाड प्यार शय्यासान्निध्य बेठके करे। तब श्रीनवनीतप्रियाजी अपने श्रीहस्तसों अपने मुखारविंदके उपरसुं चादर उंची करके जागे। आपही उठके शय्यापर बिराजे। तब गजनधावन आपको पधराय सिंहासनपर पधरावे, ओर बिनति करे, "राज! अरोगो!" तब श्रीनवनीतप्रियाजी अरोगे। एसो रीत सदाकी हती। एक दिन गजनधावन नित्य की रीत प्रमान मंगलभोग साजके श्रीनवनीतप्रियाजीको जगावन गये, सो बहुत उपाय किये परंतु आप जागे नहीं। तब तो गजधावनको बहुत चिंता भई। जो कहा अपराध पर्यो हे? जो तीन प्रहर दिन चढ्यो, आप जागे नहीं। तब तो पडोसमें ओर वैष्णव हते, तिनतें पूछी

"जो आज आप जागत नाहीं, सो कहा उपाय करुं?" तब पडोसीने पूछी, "जो तुमने आज कहा कहा काम कियो हे?" तब गजनधावनने कही, "जो कामकाज तो सब घरके भीतर कियो हे। एक आंचके लिये बहार गयो हतो। सो लेके फिर घर आय गयो।" तब पाडोसीने पूछी, "जो बहार काहूसो कछु बतरायो?" तब गजनधावनने कही, मैं तो काहूसों बतरायो नाहीं। मोकुं तो एक हमारी ज्ञातिको मिल्यो, सो हुक्का फूंकत चल्यो जात हतो। वाहूं देवके मैं नाकके आडे लता देके चल्यो आयो।" तब पाडोसीने कही, "जो इनहुको मन दुःख्यो, जासुं आप जागे नाहीं। अब एक काम करो, जो एक नयो हुक्का लेके वाके घरके आगे फिरो, जब वह देखे तब घर आयके नहाइयो।" सो जेसे पडोसीने कही वेसेही गजनधावनने कियो,

जब वो ज्ञातकेने देखे तब घर आयके नहाये। नहायके भीतर जायके देखे तो श्रीनवनीत-प्रियाजी शय्याके उपर खेल रहे हे। तब सिंहासनपर पधरायके विनति करी, "जो राज! अरोगो!" तब आप अरोगे।

वचनामृत २२.

कांकरोलीमें पहेले जो बडे टिकेत विराजते हते सो राजभोग आरती कर सब सेवातें पहुंच अनोसर भये पीछे बहार आयके विराजें और मनुष्य पास ढाडो होय सो हेलो करे—जो चरणस्पर्श होय हे!! जाको करने होय सो चलो! सो हेला सुनके वैष्णव आवें। सो कोई तो नहाये होय, कोई विना नहायो होय, कोई बजारके कपडा पहेरे भये छीयेछाये सब आवें, सो चरणस्पर्श करके जाय। तब आप सूधे भोजनकुं पधारे। एसे करत बहुत दिन

भये। तब भैया बंदनमें चर्चा चली, जो वैष्णव बजारमेंसुं छीछायके चरणस्पर्श कर ज़ाय ओर ता पीछे आप बिना नहाये भोजन करे हें सो बात उचित नाहीं। सो भैयाबंद चार स्वरूप एकमत करके कांकरोलीवारे टिकेतके पास पधारे। आपने बहुत आदरसत्कार कियो। फिर टिकेतने विनति करी, "जो आपको पधारनो कोन कारन भयो? सो कृपाकर कहिये।" तब चारों स्वरूप एक संग बोले, "जो आप सब कंठीवंधको चरणस्पर्श राजभोग पीछे देओ हो, तामें कोई नहायो होय, कोई बजारके कपडा पहेरे होय, सो चरणस्पर्श कर जाय, पीछे आप विना नहाये, सखडी भोजन करो हो, सो बात उचित नाहीं। तब टिकेतने कही, "जो बात तो प्रमान हे, परंतु हमको श्रीद्वारिकानाथजीकी सेवा करतमें अपराध पडे, सो

हम जाने जो वैष्णवके छियेसुं पवित्र होयंगे। जाके लिये इतनो करें हें। ता उपरांत जेसी आज्ञा" इतने वचन टिकेतके सुनके चारों स्वरूप चकित होय रहे, कही "जो आपके मनको अभिप्राय हमने जान्यो नाहीं।" एसे कही के बहुत प्रसन्न भये। सोइ रीत अद्यापि कांकरोलीवारेके घरमें चले हें, तातें बडनको मंदभागी जीव कहांसुं जाने?

वचनामृत २३.

कांकरोलीवारेके घरमें एक घोडा हतो। सो घोडा दीखवेमें वहुत सुंदर अरु वेसोही चलवेमें। सो टिकेतको ममत्व घोडापें बहुत भयो। सो सोनेको गहना, रत्नजडित ओर कीनखापको साज, ओर खोराकमें दोय चीज जलेबी अरु दूध। सो या तरहसुं वरस पांच सात कारखानो चल्यो। सो लाखन रुपीआ

उड गये। घर सबरो घोडा खाय गयो। लोगनने बहुतेरे समझाये, परतु टिकेतने काहूकी न सुनी। ओर जगतमें अपकीर्तिको तो कहा कहेनो? एसे करत कोई प्राचीन स्वरूप टिकेतके मित्र होयंगे सो पधारे। तब टिकेतने बहुत आदरसत्कार कियो। बिनति करी, "कहो! केसे पधारनो भयो?" तब प्राचीन स्वरूपने कही, "कछु कहेवेकु आयो हुं," तब टिकेतने कही, "भले सुखेन कहो, आप न कहोगे तो ओर कोन कहेगो? परंतु जो बात आप कहेवेकुं आये हो, सो बात तो मत कहियो। क्यों? जो या घोडापें तो श्री द्वारिकानाथजी आप सवारी करें हें।" इतनो सुनके प्राचीन स्वरूप बहुत प्रसन्न भये। ओर कही, "जो अब के या घोडाकों पहेलेतें अधिक लाड लडाइयो।" इतनो कह के घर पधारे। तातें बड-

नके प्रभावको जीव कहा जाने ?

वचनामृत ७४.

बहुरी कोई समे कांकरोलीमें भवैया आये। सो खेल बहुत सुंदर कियो। सो नित्य भवाई होय। सो जब एक बरस दिन भयो, तब जगतमें लोग काहेव लगे जो। टिकेत भवैयाको घर खवावे हें। एसे करत कोई परदेशी बालक कांकरोली पधारे। टिकेतसुं कही, "जो वृथा पैसा भवाईमें खराब करने ताको कारन कहा?" तब टिकेतने कही, "हां, आजको दिन तो करावेंगे, फिर जैसे आप आज्ञा करोगे तेसे करेंगे।" सो वा दिना दोनो स्वरूप संग पधारे। भवाईको प्रारंभ भयो इतनेमें श्रीद्वारिकानाथजी पधारे, सो आयके टिकेतकी गोदमें बिराजे सो परदेशी बालककुं दर्शन भये। सो दर्शन करके बहुत प्रसन्न भये। भवाई पूरन भई,

तब घर आये। तब टिकेतने कही, "भाई! कहो, अब केसे करेंगे?" तब परदेशी बालकने कहा, "जो अब एसे करो जो यह भवैया कोई प्रकारसुं सदा यहांही रहे आवे। कहुं जान न पावे।" एसे कहके पधारे। अब बडेनकी बातमें जीवकी गम कहांताई पहुचे?

वचनामृत २५.

अब श्रीमहाप्रभुजीने सबनके उपर टौंक करी हे, सो लिखें हें। प्रथम श्रीमहारानीजीकुं, पीछे श्रीनाथजीकुं, पीछे व्रजभक्तनकुं। श्रीकृष्ण जब द्वारिकाजासुं स्वधाम पधारे, तब आठा पट्टरानी ओर सब आपको परिकर महाउदास होयके, अर्जुनकुं संग लेके व्रजमें आये। तब श्रीमहारानीजी आभरनसहित बडे उत्साहसों सामे पधारे। सो देखके विनकुं दुःख बढती लग्यो। ओर दूसरे जब वसुदेवजी प्रभुनकुं प-

धराय लावत हते, तब जल नासिका तांई आयो, तब गभराये। तातें आपने दोनो जगह यह टोक करी है, "जो आखिर तो यमकी बहन!" ओर श्रीनाथजीको नाम धर्यो "दुष्ट-दुर्बुद्धिहेतवे नमः।" श्रीस्वामिनीजीकुं जो एसे प्रभुसो हू मान। श्रीयशोदाजीसों कह्यो, जो यह जननी! जो तनक दहींके लिये प्रभुनकों बांधे। ओर व्रजभक्तनको कह्यो जो स्नेहमार्ग छोडके शरनमार्गमें आवत भाये। जब इंद्रने वृष्टि करी, तब गभरायके प्रभुनसों प्रार्थना करी, जो हमारी सहाय करो। परंतु जो कहेते जो प्रभुनको यत्न करो तो आप न टोंकते, परतु कह्यो जो हमारी सहाय करो, तातें श्रीमहाप्रभुजीने टोंके। जो स्नेहमार्गकुं छोडके शरणमार्गकुं आवत भये।

॥ इति वचनामृत २५ सपूण ॥

श्रीगोवर्धननाथजीना प्राकट्यनी वार्ता.

शुद्ध व्रज भाषामां, तेमज श्रीनाथजीनां केटलांक धोळ अने नाथजीना उत्तम फोटा साथे, ग्लेज, चीकणा कागळमां छपाशे छे कींमत छ आना.

श्री पुरुषोत्तमसहस्त्रनाम स्तोत्रम्.

(सटीक गुजराती भाषामां विस्तृत विवेचन पूर्वक करेलुं शुद्ध भाषान्तर.) [आवृत्ति २ जी]

आ ग्रन्थमां श्रीपुरुषोत्तमनां हजार नाम श्रीमद् भागवतमांथा तत्त्वरुपे दोहन करी श्रीमद्वल्लभाचार्यजीए प्रकट करेलां छे के जेनो पाठ करवाथी श्रीमद् भागवतनो पाठ करवा जेटलुं फळ प्राप्त थाय छे आ ग्रन्थ उपर पंचम गृहना तिलकायत श्रीरघुनाथजी महाराजे "नामचन्द्रिका" नामनो संस्कृतमां विस्तृत टोका लखो छे. ते टीकानुं मूळ श्लोक साथे भाषांतर (के जे अत्यार सुधी प्रकट थयुं नथी आपवामां आव्युं छे तेमज श्रुति, स्मृति, पुराण संहिता गीता आदि ग्रन्थोना प्रमाणाथी ते नामोनुं समर्थ रीते प्रतिपादन करवामां आव्युं छे तेथी दरेक वैष्णवने ते नित्यनियममां पाठ करवा खास उपयोगी छे श्रीमहाप्रभुजी तथा टीकाकार श्रीरघुनाथजी महाराजना उत्तम फोटा साथे छतां कींमत मात्र रु. १-०-० एक रुपीओ राखो छे.

श्रीमद् गोस्वामी श्रीगोकुलनाथजी (माळाप्रसंगवाळा) विरचीत.

॥ भावसिन्धु ॥

आ ग्र थमां श्री महाप्रभुजी तथा श्रीगुसांइजीना निज अंतरंग कृपापात्र भगवदियो ८४ अने २५२ वैष्णवो पकी महानुभावो एवा मात्र २२ वैष्णवोनी वार्ताना भाव श्री गोकुलेशजीए आधुनिक जीवो उपर कृपा करी जणाव्या छे. हाल ८४ अने २५२ वैष्णवोनी वार्ता आपणे वांचीए छीए ते वार्ताओ पण आ श्रीगोकुलेशजीएज प्रकट करी छे आ आ बधी वार्ताओमां मुख्य अने जेना भाव अति गुढ छे, जेना स्नेहनी परिसीमा नथी जेओ कोटिमां विरला गणाय छे एवा भगवदीयोना वार्ताना भाव श्रीगोकुलेशजीए जणाव्या छे ने उपरांत केटलोक शोध करी बीजी बधु माहिती पण आपी छपाव्युं छे कीं. १ ४-० सवा रुपीआ.

स्वरूपदर्शन. (आवृत्ति ४ थी)

आ पुस्तक श्रीनाथजी आदि मात स्वरूप, श्रीमहाप्रभुजी, श्रीगुसांइजी, सातबालजी, आदि घणा प्राचीन अने हाल भूतळ उपर बिराजता घणा श्रीगोस्वामी बाळकोना उत्तमोत्तम, सुंदर देदिप्यमान, चीत्रो मळी लगभग १४० स्वरुपना चित्रोनु एक सुन्दर पुस्तक याने आल्बम सारा उंची जातना आर्टपेपर उपर छपावी महान् खरचे अने अत्यंत परिश्रमे तयार करवामां आव्युं छे आ पुस्तकनो प्रथमावृत्ति थया पछी श्रीमद्गोस्वामी श्रीगिरिधरलालजी

महाराज शेरगढवाळानो आज्ञानुसार ने तेमणे करेली सूचना मुजब खूटतां चित्रो महान खरचे तयार करावी पाते बतावेला अनुक्रम प्रमाणे चीत्रो गोठवी तयार करवामां आव्युं छे जेथी दरेक वैष्णवोए आ पुस्तक मंगावी तेमां आपेलां चीत्रजीनां दर्शननो लाभ लेवा चुकवु नहि सुन्दर देदिप्यमान खादीनुं शुद्ध पाकुं पुठु करवामां आव्युं छे छतां न्योच्छावर मात्र नहीं जेवाज फक्त रु २-०-० बे रुपीआ राखवामां आवी छे.

श्रीमद्गुजीमहाराजकृत ३२ वचनामृत,

तथा दीनता आश्रयनां ७५ कीर्तनो सहित,

आ श्रीमद्गुजीमहाराजे वैष्णवोना कल्याणने माटे पोताना स्वमुखे जीवने शिक्षार्थे परम कृपा करी ३२ वचनामृत बनाव्यां छे आ पुस्तक अत्यार सुधी अप्रगटीत हतुं ते महान परिश्रमे शोधी लावी शुद्ध करी छपाव्यु छे. वळी महाराजश्रीए घणा छप्पन भोग कर्या छे ते पकी श्रीद्वारकाना छप्पन भोगना वर्णननुं धोळ गावाना रागमां बनाव्युं छे ते तथा महाराजश्रीए करेलां दीनता आश्रयनां ७५ पद तथा डाकोरजीमां करेला छप्पन भोगनुं वर्णन तथा श्रीमहाराजश्रीना जीवनचरित्रना केटलाक प्रसंगो वगेरे महान परिश्रमे शोधी लावी प्रकट कर्युं छे आवुं अप्रकटीत साहीत्य वैष्णवोना करकमलमां मुकवाथी अलभ्य लाभ समजी ताकीदे खरीदवुं जोइए कीमत मात्र ०-६-० आना.

श्रीमद् गोस्वामी श्रीबालकृष्णलालजी महाराजना बहुजी
महाराजश्रीनी खास आज्ञाथी

तृतीय गृह तिलकायित–कांकरोलीस्थ.

श्रीमद्गोस्वामी श्रीगिरिधरलालजी महाराजकृत.

१२० वचनामृत.

श्रीगिरिधरलालजी महाराजश्रीए पोते ८० वर्षनी वृद्ध वये निजजनो जीवो उपर कृपा करवा सं १९३३नी सालमां इम्भोई पधारी वैष्णवोना कल्याण माटे प्राचीन वार्ताओ संप्रदायनु गुढ रहस्य, वैष्णवोने भक्ति नितो भावना उत्पन्न थाय तेवा प्रसंगो, श्रीठाकोरजीना स्वरुपनो सेवा शृंगारनी भावना वगेरे गुढ अने गुप्त रहस्यमय प्रसंगोनुं वर्णन करी, जीवना शिक्षार्थे कृपा करी, स्वमुखारविंदथी वचन सुधानु पान कराव्यो १२० वचनामृत लखाव्यां छे जे अत्यार सुधी अप्रकाशित हतां. तेनी बेचार प्रतो एकत्र करी,

(अक्षर आ लाइन जेवाज मोटा अक्षरथी)

शुद्ध करी छपाव्यो छे मोटी साइझनां ४०० उपरांत पृष्ठ तेमज ग्रन्थकर्ता श्रीगिरिधरलालजी, तथा श्रीबालकृष्णलालजी तथा तेमना नित्यलीलास्थ बेटालजी, तथा हाल बिराजता तृतियगृहतिलक श्रीव्रजभूषणलालजी तथा चि. श्रीविठ्ठलनाथबावा एम छ फोटा आपवामां आव्या छे आ ग्रन्थ छपाववा माटे अमोए खास श्रीकांकरोली जइ श्रीबहुजी महाराजने विनंती करी हती जेथी पोते अत्यन्त प्रसन्नतापूर्वक छपाववा आज्ञा आपी छे. माटे दरेक वैष्णवोए अवश्य खरीद करी वांचवुं जोइए न्योछावर मात्र रु ३–०–०

तमारां घरोने केवी रीते शणगारशो ?

जुओ ! सांभळो ! विचारो ?

पचास वरसथी वैष्णवो फरीआद करे छे के, सस्तामां रस्तां छेल्लो ढबनां आंख ठरी जाय तेवां सांप्रदायिक चित्रो क्यां छे ? आवां चित्रो न मळ्यां जेथी गमे तेवां चित्रो अमारा घरमां भराइ गयां.

पण सबुर ! जरा सांभळो ! तमारी ए फरीयाद दूर करवा माटे हालमां अमोए घणा मोटा खरचे उत्तमोत्तम चित्रकलाना नमुनारूपे अति सुंदर रंगीन चित्रो त्रण पांच सात ने दश जुदा जुदा प्रकारना उत्तम रंगोमां छपाव्यां छे. (सोनेरी रंग सुद्धां) सारामां सारा सुंदर ने सुशोभित चित्रोनो एक महान् संग्रह मोटा खरचे तैयार कर्यो छे आ चित्रो जोतांज तमारी आंख ठरी जशे, हृदयमां अवनवा भावो उभराशे, ने प्रेम भक्तिना अंकुरो उत्पन्न थशे. आटलु छतां तेनी न्योछावर पण तद्दन चित्रोना कामना प्रमाणमां तो नहि जेवीज छे एम मालुम पडशे.

चित्रोना नमुना.

श्री नाथजी साइझ १४×११ श्री महाप्रभुजी ,, ,,	सात जातना रंगमां न्यो. दरेकना बे आना.
श्री यमुनाजी साइझ १४+११ श्री गुसांइजी.	सोनेरी रंग साथे दश जातना रंगोमां न्याछावर दरेकना त्रण आना.

श्री नाथजी ९×७, श्री यमुनाजी ९×७, श्रीमहाप्रभुजी ९×७, श्री नाथजीने श्रीमहाप्रभुजी पवित्रां धराचे छे, श्रीकांकरोलीवाळा वंने लालबावा, श्री टीकेत श्री दामोदरलालजी, श्रीरणछोडलालजी अमदावादवाळा, न्यो. दरेकनो एक आनो. वगेरे

प्रत्येक मातापिताए पोतानी कन्याओने आ पुस्तक वंचाववुं ज जोइए.

कन्या शिक्षण. (हिन्दीमां)

(आवृत्ति १ ली)

नानी उम्मरनी केवळ कुमारिका बाळाओ माटेज, सहल सादी ने स्हेली नाना बाळकोनीज भाषामां बोलाय तेवी शलीथी. गृह शिक्षण साथे धर्म शिक्षण मळे तेवुं नानकडुं पण रमुजी पुस्तक २८ पाठमां रचेलुं छे स्हेनोने गावानां प्रभातीयां, हालरडां, रमतोनां गीतो वगेरे पण आपेलां छे.

हिन्दी साहित्यमां एक पण पुस्तक नानी बालीकाओ माटे आवा प्रकारनुं जोवामां आवलुं नथी दरेक व्हेनो पासे होवुंज जोइए माटे आजेज मंगावी ल्यो. कींमत कंइपण नफानी आशा राख्या विना फक्त चार आना ज छे.

अमारां सघळां पुस्तको मळवानां ठेकाणां.

१ लल्लुभाइ छगनलाल देशाइ. रीचीरोड. पतासानी पोळ पासे, नं. ११०, मेडा उपर—अमदावाद

२ प्रसिद्ध बुकसेलरो ... ...अमदावाद

३ श्रीपुष्टिमार्गीय पुस्तकालय... ... ... नडीआद.

४ चुनीलाल कृष्णाशंकर शर्मा, भुलेश्वर महाराजनो भोइवाडो, मोटुं मंदिर—मुंबाइ (२)

५ पंडित नारायण मुळजी बुकसेलर-कालबादेवीरोड मुंबाइ (२

६ जीवनलाल पन्ड सन्स. बुकसेलर कालबादेवीरोड मुंबाइ (२

७ कीसनीआ कीकाभाइ देशाइ शेरी श्रीनाथजीनुं मंदिर-वडोदरा

८ गोपाळदास गीरधरदास परीख मोटुं मंदिर-सुरत.

९ मनीराम बळदेव कीशनपुरा—इंदोर.

१० महादेव शालीगराम ... श्रीनाथद्वार.

११ मकनजी जठाभाइ(मुगटवाळा, श्री दाउजीनुं मंदिर-वडोदरा

१२ रवजी भाणजी. जोडीया बजार ... करांची